Indian Streams Reserach Journal
Vol.1,Issue.XI/Dec; 11pp.1-4

डॉ. नीता सिंग

ISSN:-2230-7850

Research Papers

"मिथक : मानवीय कल्पना की रूपकात्मक भाषा"

डॉ. नीता सिंग
हिन्दी विभागाध्यक्ष
श्री बिंझाणी नगर महाविद्यालय,
उमरेड रोड, नागपुर – 09

Abstract

'मिथ' के लिए हिन्दी शब्द है पुराख्यान। किन्तु अब 'मिथक' ही एक प्रकार से रुढ़ हो गया है। सामान्य रुप में मिथक का अर्थ है ऐसी परंपरागत कथा जिसका संबंध अतिप्राकृत घटनाओं और भावों से होता है। मिथक मूलतः आदिम मानव के समष्टि–मन की सृष्टि है जिसमें चेतन की अपेक्षा अचेतन प्रक्रिया का प्राधान्य रहता है। मिथक की रचना उस समय हुई जब मानव और प्रकृति के बीच की विभाजक रेखाएँ स्पष्ट नहीं थी। दोनों एक सार्वभौम जीवन में सहभागी थे। मनुष्य शुरू से ही बाह्य प्रकृति को समझने और उसे अपने काबू में करने की कोशिश करता आया है। ज्ञान–विज्ञान के साथ जितना ही वह प्रकृति के नियमों और रहस्यों को समझ सका है, उसी अनुपात में वह प्रकृतिपर विजय पा सका है और इस तरह स्वतंत्रता की दिशा में अग्रसर हो रहा हैं।

"प्रकृति की जिन शक्तियों का आदिकालीन मनुष्य समझ नहीं पाता था और जिन्हें देखकर वह आश्चर्य से भर उठता था उन सब पर उसने किसी दैवी या अतिमानवीय शक्ति का आरोपण किया।"1 मिथक की रचना में यद्यपि कल्पना का अनिवार्य योगदान रहता हैं, फिर भी उसकी प्रतीति सत्य रुप में ही होती हैं। कल्पना और सत्य अथवा भावगत सत्य और वस्तुगत सत्य की अभेदप्रतीति मिथक की प्रकल्पना का आधार तत्व हैं। वायु के प्रचंड वेग, समुद्र की उत्तल तरंगें, सब कुछ को जलाकर खाक कर देने वाली अग्नि, बादलों की गड़गड़ाहट, सूर्य–चन्द्र का उदय–अस्त और वनस्पतियों का ऊगना, बढ़ना और नष्ट होना सब उसके लिए किसी रहस्यमय दैवी शक्ति के समान थे, और इसी बिंदु से जहाँ ज्ञात और अज्ञात आपस में मिलते हैं, कल्पना और मिथकों का संसार आरंभ होता है। मिथक एक तरफ कल्पना के सहारे प्रकृति को अनुकूल बनाने की चेष्टा के परिणाम हैं तो दूसरी तरफ वह मानवीय कल्पना को सृजनात्मक शक्ति की असीम संभावनाओं को संकेतित करते हैं।

"यथार्थ की दुनिया में जो मनुष्य प्रकृति की शक्तियों के समक्ष असहाय था, कल्पना में वह सर्वशक्तिमान बन बैठा। वास्तविक दुनिया में जो असंभव था, फैंटेसी की दुनिया में उसने उसे संभव बनाया। वहाँ पर हवा में उड़ सकता था, समुद्र पर पुल बना सकता था, सुख और शांति से पूर्ण स्वर्ग या रामराज्य की कल्पना कर सकता था। वह मर्त्य था लेकिन उसने अमरता की कल्पना की।"2 स्काटलैंड के सेंट एंड्रज विश्वविद्या य में यूनानी भाषा के प्रोफेसर एच.जे. रोज ने मिथक के स्थूल रूप से तीन भेदों का उल्लेख किया हैं – सृष्टि संबंधी मिथक, प्रलय संबंधी मिथक, देवताओं के प्रणयाचार संबंधी मिथक।

सभी प्राचीन जातियों के वाङ्मय में इन तीनों का प्रचुरता से उल्लेख मिलता है। भारतीय वाङ्मय में पुराण का लक्षण इस प्रकार किया गया हैं – "सर्गश्च प्रति – सर्गश्च वंशी मन्वन्तराणिच। वंशानुचरित चैव पुराणं पंचलक्षणम् जिस ग्रंथ में सर्ग अर्थात् में सृष्टि का आरंभ, प्रतिसर्ग अर्थात् पुनःसृष्टि का विकास एवं विलय, वंश अर्थात् सृष्टि के आदिम काल की वंशावली, मन्वत्तर अर्थात् सभी मनुओं के आधिपत्यकाल की घटनाओं तथा वंशानुचरित यानी इतिहास के प्रमुख राजवंशों का वर्णन हो उसे 'पुराण' कहते हैं।"
(हिन्दी विश्वकोश)

भारतीय पुराण के सर्ग–विषयक और रोज द्वारा निरूपित सृष्टि संबंधी मिथक–वर्ग का साम्य तो सर्वथा स्पष्ट ही हैं। विश्व की प्राचीन जातियों जैसे मध्य एशिया की प्राचीन सामी जातियों की पुराकथाओं में सृष्टि के विकास के संबंध में एक विशेष मिथक का प्रयोग हुआ हैं। किसी समय यह अंडकार पदार्थ अपने आप कटकर सहसा दो भागों में विभक्त हो गया और इसमें से एक देव का जन्म हुआ जिसने अंडे के आधे भाग के आकाश का और से पृथ्वी का निर्माण किया। मत्स्यपुराण के द्वितीय अध्याय–सृष्टि प्रकरण में सृष्टि के आरंभ की कथा प्रायः इसी प्रकार हैं – "महाप्रलय के उपरांत सर्वत्र अंधकार व्याप्त हो गया। तब स्वयंभू नारायण–रुप में प्रकट हुए। अपने शरीर से विश्व की रचना करने की इच्छा से उन्होंने पहले जल

उत्पन्न किया और उसमें फिर बीज की सृष्टि की। उससे सहस्त्रों सूर्यो के सदृश्य दीप्तिमान स्वर्ग और रजत के रंग का एक अंडा उत्पन्न हुआ जिसमें स्वयंभू नारायण स्वयं प्रविष्ट होकर विष्णुपद को प्राप्त हुए। इसके पश्चात् भगवान ने सर्वप्रथम आदित्य की सृष्टि की जिससे वे पाठ करते हुए ब्रह्मा उत्पन्न हुए। फिर उस अंडाकार पदार्थ को दो बराबर भागों में विभक्त कर आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया। उसके उपरांत क्रमशः दिशाओं शैलों, मेघमंडल, नदियों, मनुओं और नाना रत्नो से युक्त समुद्रों का अविर्भाव हुआ।"

इसी प्रकार 'प्रतिसर्ग' और 'मन्वन्तर' से संबध्द पुराकथाओं में प्रलय–विषयक मिथक–वर्ग का स्पष्ट रूप से अंतर्भाव है। प्रलय और उससे अवशिष्ट मनु तथा उसकी नाव की आदिम कथा सामी जातियों के प्राचीन वाङ्मय में नोह और उसकी कश्ती की पुराकथा के रूप में प्रकारांतर से विर्णित है। जिस प्रकार पुराणों के अनुसार प्रत्येक मन्वन्तर के उपरांत प्रलय में संपूर्ण सृष्टि नष्ट हो जाती हैं, "केवल एक नाव पर आरुढ़ मनु बच रहते हैं जो नवीन मन्वन्तर का विकास करते हैं, इसी प्रकार मध्य एशिया की हीब्रू आदि प्राचीन भाषाओं में वर्णित पुराकथा के अनुसार प्रलय में जब सारी दुनिया डूब जाती हैं तो नोह या नुह नामक व्यक्ति, जो अपनी नाव के द्वारा प्रलय के समुद्र का संतरण कर सुरक्षित बच जाता है, पुनः सृष्टि का उपक्रम करता है। पुराण में जिसे प्रतिसर्ग कहा गया है उसी का वर्णन पश्चिम के मिथक–शास्त्र में उपसृष्टि के रूप में किया गया हैं।"3

पुराणों में वर्णित आदिम काल की वंशावली तथा परवर्ती राजवंशों के वर्णन और देवताओं के प्रणय–विवाह आदि से संबंध्द मिथक की मूलतः अधिक भिन्न नहीं हैं, क्योंकि अनेक मिथकों का संबंध निश्चय ही वंश–विकास के साथ हैं। भारतीय पुराणों में वंश वर्णन ढेर सारे भरे पड़े है। राम और दशरथ की वंशपरंपरा इक्ष्वाकु से पिछले अंत में सूर्य के साथ ही जाकर जुड़ती हैं। इसी प्रकार चंद्रवंशी, अग्निवंशी, आदि अनेक राज–परिवारों की कथाएँ नाना पुराणों में विभिन्न रूपों से वर्णित हैं। अनेक पुराकथाओं में आकाश की कल्पना पुरुष रूप में और पृथ्वी की नारी रूप में की गई हैं। 'पिता आकाश ने माता पृथ्वी का वरण किया, और इसीलिए उसकी इतनी अधिक संतान हैं।' परंतु इसकी अपेक्षा पुरुष–प्रकृति, ब्रह्म–माया, शिव–शक्ति, विष्णु–लक्ष्मी आदि के युग्म संबंध और इसके विश्व की उत्पत्ति की कथा अधिक मौलिक हैं। इसके अतिरिक्त देवताओं की प्रणय–कथाएँ और विशेष परिस्थितियों में देव तथा मानवी के प्रेम की कथाएँ भी पुराणों में भरी पड़ी हैं।

प्रो. शर्मा के मतानुसार – मिथ वस्तुतः पुराण कथाओं से गृहीत प्रतीक है। अभिमन्यु मिथ का अर्थ है – "छल–कपट से घिर कर मारा जाता हुआ सत्य।"4

"मिथक के समानधर्मी कथा–रूपों में सबसे प्रमुख है अनुश्रुति या देवकथा।"5 अधिकांश विद्वान मिथक और अनुश्रुति में भेद मानते है। अनुश्रुति में ऐतिहासिक तत्वों को कथा–रूढ़ियों से प्रायः पृथक किया जा सकता हैं, किंतु मिथक में तथ्य और कल्पना का अभेद्य संबध रहता है, किंतु यह भेद बहुत बारीक है और इसका निर्णय सभी संदर्भो में संभव नहीं होता। भारतीय पुरा–साहित्य के विषय में पाजिटर से लेकर मजुमदार आदि आधुनिक विद्वानों ने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है कि उसमें इतिहास के सूत्र–सर्वत्र बिखरे पड़े हैं। "प्रसाद जी ने प्रलय और उसकी परवर्ती मनु–श्रध्दा–इड़ा की कथा को पूर्ण विश्वास के साथ ऐतिहासिक भूमिका पर प्रतिष्ठित किया हैं। आधुनिक नृवैज्ञानिक मैलिनोस्की ने इसीलिए अनुश्रुति को मिथक का ही एक प्रकार माना हैं।"6

भारत तथा पश्चिम के प्रायः सभी प्रसिध्द प्रबंध, खंडकाव्य तथा आख्यान काव्यों की कथावस्तु के मूलसूत्र प्राचीन मिथकों में प्रत्यक्ष रूप में मिल जाते हैं। होमर के दोनों महाकाव्यों 'इलियड़' और 'ओडिसी' के कथानकों का निर्माण पूर्ववर्ती मिथकों के आधार पर ही हुआ है जो मौखिक परपंरा के रूप में प्रचलित थे और जिनमें आदिम–मानव जाति की राग–द्वेष, प्रेम, कामुकता, वासना, ईर्ष्या, अहंकार, प्रतिशोध, भय, घृणा आदि वृत्तियाँ विविध रूपों में प्रतिफलित थी। भारतीय इंद्रवृत्त युध्द का कथानक देवासुर संग्राम का रूप धारण कर अनेक प्रकार से परवर्ती काव्यों के कथानकों की सृष्टि करता है। विशेषज्ञों ने प्रकृति की सृर्जन और विनाश–लीलाओं के मिथक के रूप में भी इसका आख्यान किया हैं। इसके अलावा देवताओं की अनेक प्रणय–कथाएँ, सृष्टि के विकास, मनुष्य के जन्म–मरण, प्रकृति की घटनाओं और विविध रूपों के कार्य–कारण की व्याख्या प्रस्तुत करने वाली गाथाएँ, ब्राह्मण, ग्रंथों, उपनिषदों, पुराणों आदि से होती हुई परवर्ती अभिजात काव्यों में अवतरित हुई है। रामायण और महाभारत की मूल कथाओं के सूत्र भी वैदिक मिथकों में ही प्राप्त होते हैं। सूर्यवंश के इक्ष्वाकु, दशरथ आदि के
आख्यान तो बीज रूप में हैं। राम और कृष्ण के चरित्र के सूत्र भी वैदिक मिथकों में स्पष्ट रूप से विद्यमान हैं। रामायण में एक ओर राम–रावण युद्ध में देवासुर–संग्राम का मिथक और दूसरी ओर प्रकृति की उत्पादन शक्ति का मिथक सीता के जन्म की कथा में व्यक्त हुआ हैं। संस्कृत–साहित्य के प्रसिद्ध इतिहासकार मैकडोनल के अनुसार राम, इंद्र के प्रतिरूप हैं और रावण वृत्र कल्याण में बाधक शक्तियों अंधकार, अनावृष्टि आदि का। वैदिक आख्यान में इंद्र के सहायक मरूत हैं। और ईश्वर रामायण में मरुत के पुत्र हनुमान राम के सहायक हैं। वृत्र से गौओं का उद्धार रावण के बंदीगृह में सीता के उद्धार का रूप धारण कर लेता हैं। महाभारत की कथा में इंद्र, वरूण, सूर्य, अग्नि, यम, मरुत, विष्णु, रुद्र आदि वैदिक देवता सक्रिय भाग लेते हैं और वैदिक वाङ्मय के उर्वशी–पुरूरवा, शंकुतला–दुष्यंत आदि के मिथकीय आख्यानों का रोचक रीति से विस्तार किया गया है। प्रलय और उसके साथ संबद्ध मनु तथा उसकी नाव का मिथक, जिसका संकेत ऋगवेद में और विकसित रूप शतपथ ब्राह्मण में मिलता हैं।

महाभारत की मूलकथा है भरतवंश के योद्धाओं का–भारतों का परस्पर युद्ध। युद्धिष्ठिर, अर्जुन आदि के लिए भारत विश्लेषण का प्रयोग अनेक बार हुआ हैं। यह भरत जाति वही हैं जिसकी सत्ता का केंद्र कुरूक्षेत्र था। शौर्यकर्मी भरत जाति और कुरुक्षेत्र–दोनों का उल्लेख यजुर्वेद में मिलता हैं। देवासुर–संग्राम का मिथक बीज रूप में यहाँ भी हैं। क्योंकि सभी पांडव देव–पुत्र और देवल्भावनाओं से संपन्न हैं। उनके प्रतिद्वंद्वी कौरव असुर प्रवृत्तियों के प्रतीक हैं। महाभारत को इसी अर्थ में अन्योक्तिरूपक मानने की परंपरा भी किस–न–किसी रूप में चलती रही हैं। इसके अलावा सृष्टि की कथा, सूर्यवंश–चंद्रवंश आदि की दिव्य उत्पत्ति तथा विभिन्न प्रकार के यज्ञदि के मिथकीय वर्णन भी महाभारत में भरे पड़े हैं।

समकालीन कविता में मिथ के प्रति आग्रह दिखाई पड़ता है। महाभारतकालीन कथानकों को आधार बनाकर समकालीन यथार्थ की विसंगतियों को मुखर करने का प्रयत्न किया जाता रहा है। जैसे– कुँवरनारायण ने भी महाभारत के लाक्षागृह आख्यान का वर्तमान प्रसंग में उपयोग किया हैं :–

"धीमा कर दो प्रकाश
मोम की दीवारें
गल न जायें
सपनों के लाक्षागृह
जल न जाएँ।"7

'सम्पाती' नामक कविता की उपरोक्त पंक्तियों में सिर्फ 'लाक्षागृह' शब्द का चमत्कारपूर्व प्रयोग हैं। लाख से बने घर आग तो क्या, तेज प्रकाश भी सह नहीं सकते। सपने भी रात में ही देखे जाते हैं। दिन के प्रकाश को वे भी सह नहीं पाते। समकालीन यथार्थ के सपने भी ऐसे ही हैं। इस कविता में वर्तमान–परिस्थितियों से घिरे आदमी के बिखरने और वास्तविकताओं के द्वारा थोपे गये निषेध को व्यंजित करता है। "धीमा कर दो प्रकाश" विकट परिस्थितियों को सहज बनाने पर जोर देता हैं। इसी प्रकार मोम की दीवारें कोमल

अनुभूतियों की व्यंजक है। "सपनों का लाक्षागृह" समकालीन यथार्थ की आँच में ठहर नहीं पायेगा, इसी सत्य को यह मिथव्यंजित करता है। प्राचीन पुराख्यानों का वर्तमान प्रसंग में प्रयोग समकालीन कविता का यथार्थ बन गया हैं।

"मिथक न तो कोरा काल्पनिक आख्यान है और न ही शुद्ध मानसिक रूपात्मक क्रिया। मिथक दरअसल, जागतिक, वास्तविकता का प्रतिबिम्बन करने के साथ ही यथार्थ के प्रति मनुष्य के नैतिक एवं सौंदर्यपरक रुझान को भी व्यक्त करते हैं। मार्क्स के शब्दों में 'मिथक प्रकृति से उसका तात्पर्य बाह्य भौतिक संसार से है जिसमें समाज भी शामिल है। यही कारण है कि पुराणकथाओं के मिथक–बिम्बों का भरपूर इस्तेमाल साहित्य और कलाओं में होता रहा हैं।8 मिथक जीवन के लिए अपरिहार्य है। आई.ए. रिचड्र्स ने कहा है – मिथक के बिना मनुष्य आत्मारहित क्रूर पशु की तरह हो जाएगा। यदि मनुष्य द्वारा अर्जित इन मिथकीय परम्पराओं को एकाएक समाप्त कर दिया जाए तब भी मानव नये–नये मिथक गढ़ लेगा।"9 इस अपरिहार्यता का मूल कारण है, मिथक का मानवीय वृत्तियों से सम्बद्ध होना। मिथक एवं साहित्य तत्वतः एक हैं। मिथकों में भावात्मकता, कल्पनाशीलता, प्रतीकात्मकता, चित्रात्मकता एवं रहस्यानुभूति जैसे अनेक ऐसे तत्व हैं, जो उन्हें साहित्य के अत्यंत निकट पहुँचा देते हैं। अनेक मिथक शास्त्रीयों ने मिथकों को काव्यात्मक भाषा कहा हैं। कैसिर्र तथा लैंगर ने मिथक एवं भाषा को एक साथ उत्पन्न माना है। भाषा मूल रूप में मिथकीय रही है। अतः मिथकीय कल्पनाओं ने असंख्य सृजनात्मक शब्दों से युक्त ऐसी भाषा का निर्माण किया है जिसके माध्यम से परिनिष्ठित साहित्य की सर्जना संभव हो सकी। वस्तुतः मिथकों के माध्यम से मानव ने साहित्य सृजन का संस्कार अर्जित किया है। विश्व का कोई भी साहित्य अपने देश की मिथकीय परम्पराओं से असम्पृक्त नहीं है।

आधुनिक युग में विज्ञान–उद्भूत बौद्धिकता एवं तार्किकता के फलस्वरूप मिथकों से सम्बद्ध अलौकिकता तथा चमत्कारिता के प्रति विश्वास समाप्त हो गया है, पर मिथकों की उपयोगिता एवं अर्थवत्ता समाप्त नहीं हुई हैं। इसके मूल में मिथकों की व्यापकता है। मिथको का क्षेत्र उतना ही विस्तृत है, जितना मानव का अन्तर एवं बाह्य जगत। मिथक मानव जाति की प्राचीनतम श्रेष्ठ सांस्कृतिक धरोहर है और साथ ही वह लचीली भी है अपनी इन विशेषताओ के कारण मिथक प्रत्येक युग की वास्तविकता को अभिव्यक्त करने के लिये नये–नये रूपकों एवं कल्पनाओं के साथ प्रस्तुत होता रहा हैं।
5

संदर्भ सूची :–

1) आधुनिक रचनाशीलता – द्वारिका प्रसाद 'चारुमित्र' पृ. – 31
2) आधुनिक रचनाशीलता – द्वारिका प्रसाद 'चारुमित्र' पृ. – 31
3) मिथक और साहित्य – डॉ. नगेन्द्र ।
4) समकालीन हिन्दी कविता का काव्यशास्त्र – पृ. – 183
5) मिथक और साहित्य डॉ. नगेन्द्र से उद्धृत ।
6) मिथक और साहित्य डॉ. नगेन्द्र से उद्धृत ।
7) तीसरा सप्तक – कुँवरनारायण – 'सम्पाती' पृ. – 172
8) आधुनिक रचनाशीलता – द्वारिकाप्रसाद 'चारुमित्र', पृ. – 43
9) कालरिज ऑन इमिजिनेशन – पृ. – 181